International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-08-2025, Accepted: 16-09-2025, Published: 30-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 103-106

12वीं शताब्दी का वचन साहित्य और सामाजिक सुधार पर उसका प्रभाव

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय, के. नारायणपुरा, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत

सारांश
वचन साहित्य कर्नाटक की 12वीं शताब्दी में उद्भूत एक क्रांतिकारी साहित्यिक परंपरा है, जिसने न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक चेतना को नई दिशा दी, बल्कि जाति–आधारित असमानता, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक शोषण के विरुद्ध एक शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन को जन्म दिया। बसवन्ना, अल्लमा प्रभु और अक्का महादेवी जैसे वचनकारों ने सरल कन्नड़ भाषा में रचित वचनों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों तक समानता, न्याय और भक्तिमार्ग की शिक्षा पहुँचाई। यह शोध–लेख वचन साहित्य की उत्पत्ति, उसकी साहित्यिक विशेषताओं, सामाजिक सुधार में उसकी भूमिका और आज के समय में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः वचन साहित्य, बसवन्ना, सामाजिक सुधार, कर्नाटक, भक्ति आंदोलन, अनुभव मंटप, स्त्री–स्वतंत्रता, दलित चेतना

प्रस्तावना
वचन साहित्य कर्नाटक की लोक–आधारित साहित्यिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह साहित्य शैली 12वीं शताब्दी में सामाजिक–धार्मिक असमानताओं के विरुद्ध एक जन–आंदोलन के रूप में विकसित हुई। वचनकारों की वाणियाँ बोलचाल की कन्नड़ भाषा में रचित थीं, जिससे समाज के सभी वर्गों—विशेषकर उपेक्षित और हाशिए पर स्थित समुदायों—तक न्याय और समानता का संदेश पहुँचा।

संस्कृत साहित्य जहाँ केवल विद्वानों तक सीमित था, वहीं वचन साहित्य ने साहित्य को व्यापक जन–समुदाय तक पहुँचाया। अतः वचन साहित्य केवल एक साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक–धार्मिक क्रांति थी।

प्रसिद्ध कहावत कि कलम बंदूक से अधिक शक्तिशाली होती है, साहित्य के संदर्भ में पूरी तरह सत्य सिद्ध होती है। दहेज प्रथा, बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव, फासीवाद तथा मानव जीवन को सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर प्रभावित करने वाली अनेक सामाजिक बुराइयाँ—इन सबका समाधान एक साधारण कलम और महान चिंतन से निकली रचनाओं द्वारा संभव हो पाया है।

इस शोधपत्र में वचन साहित्य पर ध्यान केंद्रित किया है, ताकि वचन साहित्य के समय में विद्यमान सामाजिक संरचनाओं और उन पर पड़े उनके प्रभावों का अध्ययन किया जा सके—एक ऐसा प्रभाव जो उनके युग में भी व्यापक था और आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक बना हुआ है।

बसवन्ना 12वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन के केंद्रीय प्रेरक बन गए और उनके समय में रचित वचन साहित्य ने जीवन और धर्म को सरल बनाने का प्रयास किया। इस साहित्य ने लोगों को धर्म, सत्यनिष्ठा और धार्मिक कर्तव्य का पालन करने की प्रेरणा दी तथा अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने का संदेश दिया। यद्यपि लाखों वचन लिखे गए थे, अनेक समय की धारा में खो गए, फिर भी हजारों वचन आज भी उपलब्ध हैं और समाज को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

बसवेश्वर के समय में धर्म ही सबका केंद्र था। चाहे वह व्यक्ति के कार्यों का योग हो या राजा के कर्म, धर्म ही सबका केंद्र था। उस समय की सामाजिक परिस्थितियाँ, हज़ारों वर्षों से शोषित, दलितों के अंतर्मन में गहरे दबी हुई असीम पीड़ा और मौन का परिणाम थीं। यह धर्म के नाम पर किए गए अत्याचारों का समग्र परिणाम था। इसीलिए बसवेश्वर ने इस सत्य की खोज की कि धर्म ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास और समाज के उत्थान की आधारशिला है। उन्होंने अनुभव किया कि यदि धार्मिक क्षेत्र में हो रहे शोषण को समाप्त कर दिया जाए, तो अन्य क्षेत्रों में सुधार स्वतः ही हो जाएगा। उन्होंने धर्म को साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मलिनता को शुद्ध करने और जड़ से उखाड़ने का सही मार्ग माना। बसवन्ना का मानना था कि समाज की भ्रष्टता का कारण धर्म के नाम पर पुरोहित वर्ग द्वारा किए गए अत्याचार थे। बसवन्ना ने अनुभव किया कि धार्मिक क्षेत्र से अलग होकर कर्म की ओर अग्रसर होकर सिद्धि प्राप्त करना असंभव है। इसीलिए उनका दशोहा दर्शन वित्तीय लेन–देन या लाभ–अवशिष्ट समीकरणों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो व्यक्ति के सभी गुणों पर नियंत्रण प्राप्त कर समाज के सर्वांगीण विकास को निर्धारित करता है।

शोध के उद्देश्य
यह शोध लेख निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है:
1. वचन साहित्य की ऐतिहासिक उत्पत्ति और विकास का विश्लेषण करना।
2. वचनकारों के साहित्य का सामाजिक सुधार पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बसवन्ना, अक्का महादेवी और अल्लमा प्रभु के योगदान को समझना।
4. वचन साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता की समीक्षा करना।

कार्य–विधि
यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है।
- **प्राथमिक स्रोतः** वचनकारों की मूल वाणियाँ, कन्नड़ धार्मिक–सांस्कृतिक ग्रंथ
- **द्वितीयक स्रोतः** शोध–लेख, इतिहास ग्रंथ, संदर्भ पुस्तकों, और वर्तमान सामाजिक अध्ययन सामग्री
- **विश्लेषणः** ऐतिहासिक, तुलनात्मक और समाज–सांस्कृतिक दृष्टिकोण

वचन साहित्य का इतिहास और विकास
वचन साहित्य की जड़ें बसवन्ना के दर्शन में निहित हैं। "वचन" का अर्थ होता है—कहना अथवा वाणी। बसवन्ना के वचन भक्ति, समानता और नैतिक आचरण पर आधारित थे। निर्गुण शिव–भक्ति, कर्मप्रधान जीवन, और जाति–भेद का विरोध इनके केंद्र में रहा।

अल्लमा प्रभु, अक्का महादेवी और चन्नबसवन्ना ने वचन साहित्य को दार्शनिक और आध्यात्मिक गहराई प्रदान की। उनकी वाणियों में सामाजिक विद्रोह, स्त्री–स्वतंत्रता, आध्यात्मिक अनुभूति और मानव–मूल्यों का समन्वय देखा जाता है

बसवेश्वर आदि शरणों के वचन उनके ईश्वर–साक्षात्कार की साधना यात्रा के अनुभवों का प्रत्यक्ष रूप थे। लगभग 800 शरणों ने इस साधना–पद्धति का अनुसरण किया और अपने अनुभवों को गुरु (अव्यक्त चेतन), लिंग (व्यक्त चेतन), जंगम (आत्मा में विद्यमान लिंगतत्व का सच्चा चेतन), पदोदक (लिंगतत्व के ज्ञाता/उत्स स्रोत के साथ निकटता), तथा प्रसाद (लिंगतत्व में पूर्ण रूप से स्थित होना) के रूप में अभिव्यक्त किया। समाज सुधार में वचन साहित्य का योगदान अमूल्य है। साहित्य, वचन लेखन केवल उच्च वर्ग, राजपरिवार के किसी विशिष्ट समुदाय तक सीमित नहीं है। सिद्धरामेश्वर ने अपने कायाक व्यवसाय के साथ, 12वीं शताब्दी में यह दर्शाया कि वचन साहित्य के सृजन के माध्यम से आम लोग भी समाज सुधार में संलग्न हो सकते हैं।

ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, इन शरणों ने मुख्यतः कर्नाटक में सामूहिक संवादों के माध्यम से ईश्वर–अनुभूति से जुड़े अनुभवों का आदान–प्रदान किया। यह कार्य बसवन्ना, चन्नबसवन्ना, अल्लमा प्रभु और सिद्धरामेश्वर के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इसी कारण यह आंदोलन व्यापक रूप से लोक–जीवन में लोकप्रिय हुआ। लगभग 200 वचन–लेखकों (वचनकारों) का दस्तावेजीकरण मिलता है, जिनमें 30 से अधिक महिलाएँ थीं।

सामाजिक सुधार में वचन साहित्य की भूमिका

1. जाति–प्रथा का विरोध

वचनकारों ने जाति–आधारित सामाजिक विभाजन को चुनौती दी। बसवन्ना का सिद्धांत था—

"जाति नहीं, कर्म ही मनुष्य का मूल्य तय करता है।"

महत्वपूर्ण तथ्य

1. उन्होंने रंग और जातिगत असमानता पर आधारित जाति व्यवस्था को अस्वीकार किया।
2. उन्होंने छुआछूत की प्रथा की निंदा की।
3. कोई व्यक्ति सिर्फ़ ऊँची जाति में जन्म लेने से महान नहीं बन जाता।
4. कोई व्यक्ति अपने कर्म और व्यवहार से ही अच्छा बनता है।
5. उन्होंने ऊँची जाति की जाति व्यवस्था की निंदा की।
6. उन्होंने घोषणा की कि किसी भी कार्य में न तो श्रेष्ठता है और न ही हीनता।
7. उन्होंने जाति व्यवस्था के सबसे निचले पायदान पर अपमानित लोगों में ईश्वर को देखा और उनका सम्मान किया।
8. जिन लोगों को मंदिरों में प्रवेश से मना कर दिया गया था, उनके शरीर को उन्होंने मंदिर बना दिया।
9. उन्होंने कहा कि जाति व्यवस्था को हृदय से त्यागे बिना खुली भक्ति से जाति व्यवस्था को नष्ट नहीं किया जा सकता।
10. उन्होंने श्रमिकों को धर्म पर आधारित जाति व्यवस्था से अलग करने का प्रयास किया।

इतिहास में बारहवीं शताब्दी क्रांतिकारी बसवन्ना के युग के रूप में दर्ज है। समाज ऊँच–नीच, गरीब–अमीर, अंधविश्वास और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं से ग्रस्त था। इस दौरान, सैकड़ों शिवभक्तों ने जाति–पाँति की परवाह किए बिना सामाजिक परिवर्तन में अद्वितीय योगदान दिया। लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रस्तावना लिखने वाले बसवन्ना ने कहा कि साहित्य, वचनों की रचना और प्रशासन किसी विशेष समुदाय तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें सभी वर्गों के लोगों की भागीदारी होनी चाहिए, जिससे यह दर्शाया गया कि सामाजिक सुधार में सभी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. स्त्री–स्वतंत्रता का समर्थन

अक्का महादेवी की वाणियाँ स्त्री–उत्पीड़न के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक हैं।

वे आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर स्वतंत्रता की पक्षधर थीं।

अगर तुम्हारे स्तन और चोटी हैं, तो तुम औरत हो,
अगर दाढ़ी–मूंछ है, तो तुम मर्द हो।
तुम्हारे बीच जो आत्मा है, वह न औरत है, न मर्द।
देखो, रामनाथ।

बीच में जो आत्मा है वह न तो पुरुष है और न ही स्त्री = यद्यपि पुरुष और स्त्री की शारीरिक विशेषताएँ भिन्न प्रतीत होती हैं, फिर भी दोनों में निवास करने वाला "जीवन" एक ही है। अर्थात जब हम वास्तविकता को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि अलैंगिक अर्थ में, पुरुष और स्त्री समान प्राणी हैं;

यद्यपि अलैंगिक अर्थ में, पुरुष और स्त्री में "यह एक जीवित प्राणी है – यह एक जीवित प्राणी है" की समानता है, सामाजिक अर्थ में, पुरुषों को प्रथम सम्मान दिया जाता है, जबकि महिलाओं को दूसरा स्थान प्राप्त है। विश्व के सभी समाजों में, "पुरुष श्रेष्ठ हैं; स्त्रियाँ निम्न हैं" का भेदभावपूर्ण रवैया प्रचलित है। इस रवैये के कारण को समझने के लिए, हमें मानव समाज के निर्माण के सामाजिक इतिहास पर नज़र डालनी होगी।

पाषाण युग में, जब मानव समूह, अन्य जानवरों की तरह, खानाबदोश थे, वे धीरे–धीरे बस गए और खेती करने लगे। इन परिवारों में, माँ मुखिया होती थी। पैदा हुए बच्चे और खेती की गई भूमि समुदाय की साझा संपत्ति होती थी। बच्चे अपनी माँ के नाम पर रखे गए कुल के होते थे, और उन्हें उस कुल का नाम विरासत में मिलता था। जब बच्चे पैदा होते थे, तो पिता कौन है, यह कोई बड़ी बात नहीं थी। पुरुष और स्त्री के बीच यौन संबंधों पर कोई प्रतिबंध नहीं थे।

अगले हज़ारों वर्षों में, लोगों के जीवन में कई बदलाव आए, और जब कृषि योग्य भूमि का स्वामित्व समग्र रूप से समुदाय से छिनकर पुरुषों के नियंत्रण में आ गया, तो संपत्ति का स्वामित्व पुरुषों के पास आ गया। पुरुष, यह सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ था कि उसके वंश से उत्पन्न संतानों को संपत्ति का अधिकार मिले, उसने स्त्री पर एक नैतिक संहिता लागू की और उसे अपने नियंत्रण में ले लिया। उसने स्त्री के यौन संबंधों पर कई प्रतिबंध लगाए, उसकी गतिविधियों को नियंत्रित किया, और उसे "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता–आवागमन की स्वतंत्रता–इच्छा की स्वतंत्रता" से वंचित कर दिया और उसे अपनी दासी बना लिया। संपत्ति और स्त्री के इस व्यक्तिगत स्वामित्व और पुरुष–प्रधान पारिवारिक संरचना के कारण, सामाजिक परिवेश में स्त्री और पुरुष के बीच लैंगिक भेदभाव उत्पन्न हुआ।

3. अनुभव मंटप—लोकतांत्रिक विमर्श मंच

बसवन्ना द्वारा स्थापित अनुभव मंटप विश्व का प्रथम "आध्यात्मिक–सामाजिक संसद" कहा जाता है। यहाँ विवेक, विचार और समानता पर विमर्श किया जाता था। अनुभव मंडप, 12वीं शताब्दी में बसवन्ना द्वारा स्थापित एक धार्मिक और सामाजिक–आध्यात्मिक संसद थी। इसे दुनिया की पहली संसद माना जाता है, जहाँ सभी जातियों और व्यवसायों के लोग अपने अनुभव साझा करने और आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विषयों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते थे। अल्लामा प्रभु इसके पहले अध्यक्ष थे।

अनुभव मंडप, 12वीं शताब्दी में समाज सुधारक बसवन्ना (बसवेश्वर) द्वारा स्थापित एक सार्वभौमिक सामाजिक–धार्मिक संसद या अकादमी थी, जिसने लोकतंत्र और समानता की नींव रखने में प्रमुख भूमिका निभाई। इसके मुख्य आयाम और महत्व इस प्रकार हैं:

प्रथम संसद: इसे भारत की पहली संसद माना जाता है, जहाँ जाति, पंथ, लिंग के भेदभाव के बिना, सभी वर्गों के लोग एक साथ बैठकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों पर चर्चा करते थे।

समानता और समावेशी समाज: इसका उद्देश्य जाति व्यवस्था को समाप्त करना और शोषण मुक्त एक समतामूलक समाज का निर्माण करना था। अक्कमहादेवी, चन्नबसवन्ना और अल्लामप्रभु जैसे विभिन्न पृष्ठभूमियों के शरण यहाँ सक्रिय थे।

वचन साहित्य की उत्पत्ति: अनुभव मंडप, वचन साहित्य का केंद्र था। शरण ने कन्नड़ भाषा में वचनों के माध्यम से अपने अनुभवों और दार्शनिक विचारों को व्यक्त किया, जिससे आम लोगों तक आध्यात्मिक विचारों की सहज पहुँच संभव हुई।

कायाका और दसोहा के सिद्धांत: यहाँ 'कायाका' (ईश्वरीय कार्य) और 'दसोहा' (समान वितरण) के सिद्धांतों की शिक्षा दी जाती थी। मुख्य संदेश यह था कि प्रत्येक व्यक्ति को काम करना चाहिए और अतिरिक्त धन का उपयोग समाज की भलाई के लिए करना चाहिए।

4. आध्यात्मिक लोकतंत्र

वचन साहित्य ने भक्ति को सभी के लिए सुलभ बनायाकृना कोई संस्कारदृवर्ग, ना पंडित वर्ग। हर व्यक्ति को ईश्वर तक सीधे पहुँचने का अधिकार।

कुछ लोग धनी हैं;

वे आपके लिए मंदिर बना सकते हैं
(या नहीं भी बना सकते हैं) –
पत्थर की, नश्वर इमारतें!
मैं धनी नहीं हूँ – मैं गरीब हूँ!
और फिर भी, मेरे पैर स्तंभ बनें,
मेरा शरीर मंदिर,
मेरा सिर स्वर्ण शिखर;
इस प्रकार मैं आपके अविनाशी घर की घोषणा करूँगा,
हे प्रभु, कुडल संगम! (बसवन्ना)

इस वचन में, बसवन्ना ने मंदिर को मानव शरीर का प्रतीक बताया है। धार्मिक निर्माण की प्रक्रिया धरती खोदने और बीज बोने से शुरू होती है। फिर बीज अंकुरित होते हैं और विभिन्न अंगों का निर्माण होता है। मंदिर के विभिन्न भागों के नाम मानव शरीर के विभिन्न अंगों के नाम पर रखे गए हैं।

मंदिर के दोनों किनारों की तुलना हाथों या पंखों से की गई है, और दोनों पैरों की तुलना स्तंभ से की गई है। मंदिर के शिखर या कलश की तुलना सिर से की गई है। मंदिर के सबसे भीतरी अँधेरे पवित्र स्थान को गर्भगृह कहा जाता है। पत्थर और ईंट से निर्मित मंदिर को मानव शरीर के मूल स्वरूप का खाका माना जाता है।

यह वचन निर्माण और कर्म के बीच के अंतर को दर्शाता है। धनवान लोग दिखावे के लिए मंदिर बनवा सकते हैं। निर्माण से मंदिर नहीं बनता। जो बनाया जाता है वह केवल कला की एक नश्वर कृति है। लेकिन जो उसके लिए बनाया जाता है वह अमर है, संपत्ति का प्रतिरूप है, निर्जीव वस्तु है, गतिशील सिद्धांत है, जंगम है। स्थावर स्थिरता का प्रतीक या ईश्वर की मूर्ति है। इसका अर्थ है मंदिर या शिव की मूर्ति जिसकी पूजा मंदिर में की जाती है। लिंगायत धर्म में, जंगम का अर्थ है वह व्यक्ति जो भौतिक संसार के सभी मोह–माया को त्यागकर एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर भक्तों को शिव के दर्शन का उपदेश देता है, संसार की गतिशील शक्ति का रूपक और ईश्वर का अवतार बनकर, भक्तों को सिद्धांतों का ज्ञान देता है और मानव जाति के उद्धार के लिए प्रयास करता है।

वचन आंदोलन गरीबों और बहिष्कृतों के लिए, अमीरों और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के विरुद्ध, गरीबों के माध्यम से और उनके लिए एक सामाजिक क्रांति के रूप में उभरा। यह अनपढ़ों के लिए, पढ़े–लिखे पुजारियों के विरुद्ध, शिव को अपना मांस और रक्त अर्पित करने वालों के लिए एक क्रांति के रूप में उभरा।

गरीब आदमी मंदिर न बना पाने की अपनी लाचारी को देखता है। फिर वह अपनी सामान्य स्थिति में लौटता है और मंदिर और घर के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है। वह कहता है कि पैर स्तंभ हैं, शरीर मंदिर है, सिर कलश है, वह स्वर्ण कलश जिसका उपयोग विरोध के लिए किया जा रहा है। यह वचन हमें बताता है कि ईश्वर की एक सुंदर मूर्ति गढ़कर, वह स्वयं ईश्वर की मूर्ति बन जाता है।

वचन साहित्य और कन्नड़ साहित्य पर प्रभाव

- कन्नड़ साहित्य को लोक–तत्वों से समृद्ध किया।
- संस्कृत के वर्चस्व को कम करते हुए साहित्य को जन–साधारण तक पहुँचाया।
- सरल, स्पष्ट और भावपूर्ण शैली ने कन्नड़ गद्य–काव्य पर स्थायी प्रभाव डाला।
- आधुनिक कर्नाटक में वचनों का सांस्कृतिक, धार्मिक और शैक्षणिक महत्व निरंतर बना हुआ है।

वर्तमान समय में वचन साहित्य की प्रासंगिकता

समानता, न्याय, स्त्री–स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता जैसे सिद्धांत आज भी सामाजिक आंदोलनों में मार्गदर्शक हैं। वर्तमान समय में, वचन साहित्य सामाजिक, धार्मिक और वैचारिक मुद्दों के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह जाति व्यवस्था, लैंगिक असमानता और शोषण जैसे मुद्दों पर प्रश्न उठाता है। आज के आधुनिक समाज की समस्याओं जैसे महंगाई, भ्रष्टाचार, राजनीति और व्यावहारिक समस्याओं पर व्यंग्य करते हुए, वचन लोगों में वैचारिक जागरूकता पैदा करते हैं।

सामाजिक समानता: वचन जाति, लिंग और वर्ग के भेदों का खंडन करते हैं और सभी के लिए समान अधिकारों की वकालत करते हैं। यह आज के समाज के लिए अधिक प्रासंगिक है।

आधुनिक समस्याओं पर व्यंग्य: आधुनिक वचन आज की वैचारिक और भौतिक समस्याओं जैसे मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य करते हैं और लोगों को उनके समाधान के बारे में सोचने पर मजबूर करते हैं।

वैचारिक प्रेरणा: वचन केवल धार्मिक विचारों तक ही सीमित नहीं हैं। इनका विश्लेषण आधुनिक समाज की समस्याओं पर किया जाता है और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा दी जाती है।

आधुनिक वचन: आधुनिक विचारक आधुनिक वचनों की रचना कर रहे हैं, जो साहित्य के नवीन स्वरूप को दर्शाता है। हालाँकि, आधुनिक वचनों का निर्माण वचन लेखकों के अनुभव और आंतरिक अंतर्दृष्टि के आधार पर हो रहा है।

मानवीय मूल्य: वचन करुणा, समानता, परिश्रम के प्रति सम्मान जैसे मानवीय मूल्यों को व्यक्त करते हैं। आज भी, ये नैतिक जीवन की नींव हैं। वचन आज भी—

- विद्यालयों में पढ़ाए जाते हैं
- मंदिरों में गाए जाते हैं
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुत होते हैं

और न्याय तथा मानवता के लिए संघर्षरत लोगों को प्रेरणा देते रहते हैं।

शोध निष्कर्ष

1. वचन साहित्य भारतीय इतिहास का सबसे लोकतांत्रिक साहित्यिक आंदोलन है।
2. बसवन्ना और अन्य वचनकारों ने सामाजिक असमानताओं को चुनौती देते हुए मानव–मूल्यों की स्थापना की।
3. यह साहित्य धार्मिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम रहा।
4. वचन साहित्य आधुनिक समाज में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 12वीं शताब्दी में था।

निष्कर्ष

वचन साहित्य केवल साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण का दस्तावेज है। वचनकारों ने शब्दों को परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनका दर्शन आज भी सामाजिक समानता, स्त्री–स्वतंत्रता और नैतिकता के पथ पर प्रेरणा देता है।

साहित्य वह सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसमें समाज को रूपांतरित करने और जनसमूहों की मान्यताओं तथा विचारों को प्रभावित करने की क्षमता होती है। साहित्य के माध्यम से मनुष्य ने जीवन का अर्थ खोजा है और जीवन को सार्थक बनाने का उद्देश्य पाया है। वचन, जिन्हें बसवन्ना और अन्य शिवशरणों द्वारा लिखा और प्रचारित किया गया, बसवन्ना ने 12वीं शताब्दी में समाज को बदलकर क्रांति की चिंगारी जलायी थी। आज का समकालीन समाज, जो भौतिकवाद और अज्ञानता से ग्रस्त है, नैतिक और मानवीय मूल्य खो चुका है। आज भी समाज उन्हीं समस्याओं और बाधाओं का सामना कर रहा है जो सदियों पहले सामाजिक समानता के लिए चुनौती बनी थीं।

इसलिए वचन आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं और वे हमारे जीवन को अधिक सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और मानवतावादी बनाने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर सकते हैं। यह साहित्य भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है, और भविष्य में भी इसके मूल्य समाज को दिशा प्रदान करते रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. Basavanna. Vachana Sangraha. Karnataka University Publications.
2. Prabhu, Allama. Vachana Vani. Kannada Sahitya Parishat.
3. Mahadevi, Akka. Shivasharana Vachanagalu. Mysore University Press.
4. Ramanujan, A.K. Speaking of Śiva. Penguin Classics.
5. Shiva Kumar, H.N. "Vachana Sahitya and Social Reform." Journal of Kannada Studies, 2018.
6. Kalburgi, M.M. Vachana Darshana. Dharwad: Vidyashankara Publications.
7. Singh, K. Bhakti Literature in South India. Orient Blackswan.
8. Bhakthi movement and literature: Refromig a tradition, edited by M. Rajagopalachary, K. Damodar Rao veerashaiva bhakthi movement and social reform chapter 5, pp 43-46.
9. Basava and his Teachings by Virupakshappa.B